दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 57 ❑ अंक-22 ❑ दिल्ली ❑ सितम्बर 2019 (द्वितीय) ❑ मूल्य : 2 रु.

दलित आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में

केरल का दलित साहित्य

• डॉ. ए. अच्युतन

भारत के किसी भी प्रदेश के दलित लोग एवं उनके कला और साहित्य सम्बन्धी विचार को प्रस्तुत करने के पहले ज्योतिबा फुले, एन.एस. फुले, एन.एस. लोखण्डे, डॉ. अम्बेडकर, पेरियार, कमेवीर शिण्डे, अय्यंकाली आदि महान क्रान्तिकारी दलित नेताओं का स्मरण करना संगत ही नहीं, अनिवार्य भी है, क्योंकि इन्हीं युगदृष्टा नेताओं ने ही भारत के करोड़ों दलितों की 'सांस्कृतिक सत्ता' के लिए विविध आयामी पृष्ठभूमि तैयार की। 1873–74 में फुले जी के नेतृत्व में 'सत्य शोध समाज' की स्थापना तथा जाति व्यवस्था से सम्बन्धित ऐतिहासिक भौतिकवादी सिद्धांत को तैयार करना एक ऐतिहासिक महत्व की घटना है। इसी से प्रेरणा पाकर एन.एस. लोखण्डे जी ने 'ब्राह्मणोत्तर मजदूर आन्दोलन' शुरू किया। इसी पृष्ठभूमि में डॉ. अम्बेडकर जी ने 'जाति उन्मूलवाद' तथा संपूर्ण दलित क्रान्ति के लिए एक दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रदान करने का प्रयास किया। शिण्डे जी 'दलित जाति सेवा संघ' की स्थापना कर अपना दायित्व निभा रहे थे।

दलित आन्दोलन एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि

केरल में दलितों का स्वतंत्रता आन्दोलन पहले ही शुरू हो चुका था। भारत के अन्य प्रदेशों की तरह केरल के दलितों का सामाजिक इतिहास मनाही का इतिहास है। सार्वजनिक सड़कों पर चलने का अधिकार, मंदिरों में प्रवेश कर आराधना करने का अधिकार, सही ढंग से वस्त्र धारण करने का अधिकार, बाजार मण्डी में सामान बेचने, खरीदने का अधिकार, अपनी गाय को दुहने का अधिकार, सामान्य भाषा का प्रयोग करने का अधिकार, अपने उपजातियों के बीच सहभोजन करने का अधिकार, शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार आदि से वंचित होकर केरल का दलित समाज जानवरों जैसा जीवन बिता रहा था। दलितों ने जमींदारों–भूस्वामियों तथा उच्च वर्ण के लोगों के लिए खेती–अहातों में अपना जीवन होम कर दिया था। उन्हीं को अछूत घोषित करके अभिजातों ने हटा दिया था। दलितों के अधिकारों को पुनः स्थापित करने की लड़ाई एक आन्दोलन का रूप धारण कर चुका था। अय्यन काली, श्रीनारायण गुरू, वेल्लिक्करा चोती, करुमप्पन, दैवत्तान, कंटन कुमारन, पाषूर रामन् चेन्नन आदि नेता इस आंदोलन के सूत्रधार थे।

1828 में जब दो चान्नार औरतें चोली पहनकर चलीं तो उनकी चोलियों को कुछ सवर्णों ने चीर डाला। चान्नारों ने विरोध किया, और करते रहे। चान्नार आन्दोलन से यह विख्यात है। आखिर 26 जुलाई 1859 को तृवांकूर महाराजा को चान्नार औरतों के वस्त्र पहनने की आजादी को मंजूरी देकर एलान करना पड़ा। सन् 1858 में श्रीनारायण गुरू द्वारा अरुविप्पुरम् में ''इल्ल्वा शिवलिंग'' की प्रतिष्ठा केरल के सामाजिक नवजागरण के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना थी। उन्होंने ब्राह्मण वर्ग के पुरोहिताई को चुनौती दी। 28 अगस्त 1863 को वेंडानूर में जन्मे अय्यन काली केरल के दलित वर्ग के उन्नायक एवं प्रथम सामाजिक क्रान्तिकारी है। आम रास्ते पर गुजरने की आजादी के लिए सर्वप्रथम काली ने लड़ाई शुरू की। सन् 1893 में बैलगाड़ी खरीद कर, सफेद पोशाक पहनकर उन्होंने गाड़ी में सवारी की। सवर्णों के साथ भारी मुठभेड़ हुई, मारपीट हुई। मगर इस घटना में एक बात स्पष्ट हुई कि दलितों का यह अनुभव हुआ कि हमें आम रास्ते से गुजरने की आजादी कोई भी न देगा, आम रास्ते से चलते रहने से ही वह अधिकार मिलेगा। दलित बच्चों को स्कूल में दाखिला होने को अधिकार पाना अय्यन काली का दूसरा लक्ष्य थां लेकिन सवर्ण लोग मानते कहां? अतः उन्होंने 1905 में वेडान्नुर में एक झोंपडी बनाकर पाठशाला की स्थापना की। केरल के दलितों की यह प्रथम पाठशाला है। सवर्णों ने आग लगाई। लेकिन काली ने उसी स्थान पर दूसरे ही दिन दूसरी झोपडी बनाई। इन सबके फलस्वरूप सरकार को स्कूल में दाखिला संबंधी आदेश जारी करना पड़ा। इसी प्रकार उन्होंने धर्मान्तरण का भी विरोध किया। काली ने यह

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

चन्द्रयान–2 का चांद छूने का सपना आज नहीं तो कल पूरा होगा

चन्द्रमा की सतह के दक्षिण ध्रुव पर उतरने के इरादे से 22 जुलाई, 2019 को श्रीहरिकोटा से राकेट द्वारा चन्द्रयान–2 को छोड़ा गया था। इससे 50 साल पहले अमेरिका के अपोलो–11 मिशन पर गये नील आर्मस्ट्राग ने चांद पर कदम रखा था। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों ने इंसान के चांद पर उतरने की 50वीं वर्षगांठ पर चन्द्रयान–2 का रोवर विक्रम चांद की धरती पर 6–7 सितम्बर को उतारने की योजना बनाई थी।

इसरो ने धरती से चन्द्रमा तक की 3,84,400 किलोमीटर (2,40,000 मील) की यात्रा के लिए चन्द्रयान–2 को तैयार करने में 960 करोड़ रुपये खर्च किये हैं।

मिशन का उद्देश्य

इस मिशन से चन्द्रमा के रहस्यों को जानने में न सिर्फ भारत को मदद मिलेगी बल्कि दुनिया के वैज्ञानिकों के ज्ञान में भी विस्तार होगा। चन्द्रयान–2 का उद्देश्य मिशन के दौरान चन्द्रमा की सतह पर मौजूद तत्वों का अध्ययन करना है। उसके चट्टान और मिट्टी की बनावट का पता लगाया जाना है। वहां मौजूद खाइयों, चोटियों की संरचना, चन्द्रमा की सतह का घनत्व और उसमें होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना है।

चन्द्रमा के ध्रुवों के पास के तापीय गुणों, जल व हाईड्रोक्सिल के निशान ढूंढने के अलावा चन्द्रमा की सतह की थ्रीडी तस्वीर लिया जाना है। चन्द्रयान–2 के सफर की सफलता से चन्द्रमा के रहस्यों पर से परदा हट सकता था और एक नये ज्ञान की जानकारी मिल सकती थी, पर चन्द्रमा की यात्रा का सफर चन्द्रमा की सतह से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी से लैंडर विक्रम का धरती से सम्पर्क टूट जाने के कारण अधूरा रह गया।

2 सितम्बर से लैंडर विक्रम चन्द्रयान–2 से अलग हुआ और वह सफलतापूर्वक धरती की कक्षा से चन्द्रमा की कक्षा में प्रवेश कर गया। वहां से 6–7 सितम्बर की रात को 1.30 से 2.30 बजे के बीच उसे चन्द्रमा की सतह पर उतरना था, पर दुर्भाग्य से चन्द्रमा की सतह से 2.1 किलोमीटर की दूरी से पहले 'लैंडर विक्रम' का अचानक सम्पर्क टूट गया, जिससे 'सफलता' मिलते–मिलते निराशा में बदल गई।

'इसरो' के बैंगलोर मुख्यालय में उस समय चन्द्रयान–2 के चन्द्रमा की सतह को छूने के रोमांचिक दृश्य को देखने के लिए जहां इस मिशन से जुड़े अन्तरिक्ष वैज्ञानिक अपने–अपने कम्प्यूटरों पर आंख गड़ाये हुए थे, वहीं वहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के अलावा देश की विभिन्न शिक्षण संस्थानों के सैकड़ों विद्यार्थी भी इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बनने को उत्सुक थे, वहीं जब 'इसरो' के अध्यक्ष के. सिवान ने बताया कि लैंडर विक्रम का उनके केन्द्र से सम्पर्क टूट गया है और उसका अब कहीं अता–पता नहीं है, तो सभी लोगों की खुशियां निराशा में बदल गईं। वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आ रहा था कि जब अन्तिम क्षण तक मिशन कामयाबी की ओर बढ़ रहा था, उसके सभी उपकरण ठीक तरह से काम कर रहे थे, कुछ ही क्षणों में लैंडर विक्रम चन्द्रमा की निर्धारित सतह पर उतरने वाला था तो सिर्फ कुछ सैंकड़ों की 2 किलोमीटर की

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

सम्पादकीय का शेष...चन्द्रयान-2 का चांद छूने का सपना आज नहीं तो कल पूरा होगा

दूरी से अचानक उससे सम्पर्क कैसे टूट गया। निराश मन से 'इसरो' अध्यक्ष के. सिवान ने इसकी सूचना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दी। मोदी जी ने चन्द्रयान–2 के मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों के दुःख और निराशा को तुरन्त भांपते हुए इसरो के अध्यक्ष के. सिवान को गले लगाते हुए और उसकी कमर थपथपाते हुए उन्हें सान्त्वना दी। उन्होंने कहा कि मिशन में आई रूकावटों के कारण वे अपना दिल छोटा न करें, क्योंकि नई सुबह होगी और उज्ज्वल कल होगा। देश को अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है और वह उनके साथ खड़ा है। उन्होंने आगे कहा–''हम बहुत करीब पहुंच गये थे लेकिन हमें और आगे जाना है। आज से मिली सीख हमें और मजबूत तथा बेहतर बनायेगी। अन्तरिक्ष कार्यक्रम में अभी सर्वश्रेष्ठ होना बाकी है। सम्पर्क टूटा, उम्मीद नहीं, प्रयास सार्थक रहे और यात्रा भी। वह हमें और मजबूत और बेहतर बनायेगी, मैं आपके साथ हूं, देश आपके साथ है।''

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विज्ञान में कोई नाकामी नहीं होती। केवल प्रयोग और प्रयास होते हैं। इसरो के वैज्ञानिक मक्खन पर नहीं, बल्कि पत्थर पर लकीर खींचने वाले लोग हैं। आप जितना संभव हो सकता था, उतने करीब आये। अब आगे की ओर देखो। देश को आप पर गर्व है।

वैज्ञानिकों को आशा, एकजुटता और उम्मीद का सन्देश देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पहले भी निराशाजनक क्षण आये हैं, लेकिन हमारा जज्बा कभी नहीं टूटा है। उन्होंने इसरो को सफलता का खजाना बताते हुए कहा कि रूकावट के कुछ क्षण उसकी उड़ान को लक्ष्य से भटका नहीं सकते। कोई भी बाधा 21वीं सदी में भारत को अपने सपनों व आकांक्षाओं को पूरा करने से नहीं रोक सकता।

चन्द्रयान–2 के लैंडर विक्रम के चन्द्रमा की सतह को छूने के करीब जाने पर धरती से सम्पर्क टूटने पर मिशन के असफल होने पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि 'हम होंगे कामयाब, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास कि हम होंगे कामयाब एक दिन।'

उन्होंने कहा कि चन्द्रयान–2 को 22 जुलाई को श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपित किया गया था और 50 दिनों तक यह पूरी तरह सफल रहा। 3 लाख 84 हजार किलोमीटर की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। केवल 2.1 किलोमीटर शेष रह गया था, जो दूरी शेष रह गई, वह नगण्य थी। यह बड़ी उपलब्धि है।

चन्द्रयान–2 के लिए इसरो टीम के वैज्ञानिकों की सिने जगत की हस्तियों ने भी सराहना की है और कहा कि जीत की राह में हमेशा रुकावट आती है और यह चन्द्र मिशन असफलता की श्रेणी में नहीं आता। अभिताभ बच्चन, शाहरूख खान, कमल हासन आदि प्रमुख कलाकारों ने इसरो के वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने वाले शब्द कहे और मिशन के लिए दिन–रात अथक परिश्रम करने के लिए उनकी प्रशंसा की।

स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर ने कहा–''सिर्फ सम्पर्क टूटा है, संकल्प नहीं, साहस अब भी बरकरार है। हमें निश्चित तौर पर सफलता मिलेगी। इसरो के वैज्ञानिकों पर हमें गर्व है। बस आगे बढ़िये।''

इस अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा–''हम इसरो ओर उससे जुड़े पुरुष और महिला वैज्ञानिकों के ऋणी हैं जिनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने भारत को अन्तरिक्ष की दुनिया में अग्रणी देशों की कतार में शामिल कर दिया है और आगे की पीढ़ियों को प्रेरित किया है कि सितारों तक पहुंचे।''

उन्होंने कहा कि हमारे वैज्ञानिकों ने अपने अथक प्रयास से देश के लोगों के दिलों में खास जगह बना ली है। हमें आशा है कि इसरो के वैज्ञानिक भले ही चन्द्रमा के लम्बे सफर को पार करते हुए कुछ मीलों की दूरी पर चन्द्रयान–2 का सम्पर्क टूट जाने से उनका आज का सफर अधूरा रह गया, पर उन्होंने हार नहीं मानी है। आज नहीं तो कल हम चांद पर जरूर पहुंचेंगे। हमें अपने वैज्ञानिकों की प्रतिभा, अनुभव और दृढ़संकल्प पर पूरा विश्वास है।

चन्द्रयान–2 मिशन के चन्द्रमा की सतह के समीप पहुंच जाना ही हमारे 'इसरो' के वैज्ञानिकों की आकाशीय ज्ञान, इंजीनियरिंग दक्षता, कल्पना को साकार कर देने का साहस, और उनके दृढ़ संकल्प को दर्शाता है जिन्होंने घर–परिवार की चिन्ता किये बिना दिन–रात अपने चन्द्रमा को छूने के 'प्रोजेक्ट' पर कार्यरत रहे ओर दुनिया को दिखा दिया कि भारत भी किसी से कम नहीं है और वह अपने बलबूते पर समग्र 'ब्रह्मांड' पर विचरण करने की क्षमता रखता है। आज भले ही हमारा चन्द्रयान–2 चन्द्रमा को छूने से कुछ दूर रह गया हो, पर कल हम उसे छुयेंगे ही नहीं, उस पर 'नया भारत' बनाने में सफल हो सकेंगे। •

– डॉ. सुमनाक्षर

ये वो देश नहीं रहा जो बाबा साहब चाहते थे

संविधान लिख जिस देश का निर्माण
बाबा साहब ने किया
आज ये वो नवनिर्माण
भारत देश नहीं रहा
संविधान है,
पर संविधान का सम्मान नहीं रहा
सपना देखा जिस उन्नत भारत का,
वो भारत नही रहा
ये वो देश नहीं रहा
जो बाबा साहब चाहते थे
सदियों से मनु प्रथा आज भी कायम है
यहां कदम कदम पर बदल जाती है जाति
कदम कदम पर बदल जाता है धर्म
हर कदम पर होता है भेदभाव यहां
ये वो देश नहीं रहा
जो बाबा साहब चाहते थे
यहां रहता हर धर्म का इंसान है
यहां रहता हर एक इंसान है
पर इंसान से ही करता वो भेदभाव है
फिर कैसा ये मानवता का देश है
ये वो देश नहीं रहा
जो बाबा साहब चाहते थे
वो वर्ण व्यवस्था आज भी कायम है
जिस व्यवस्था पर विनाश
बाबा साहब कर रहे थे
आज भी कायम है वो जाति प्रथा
आज भी नारी को पूर्ण सम्मान नहीं
ये वो देश नहीं रहा
जो बाबा साहब चाहते थे।

- नीरज सिंह कर्दम

नास्तिकता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

1. जब बच्चे का जन्म होता है तब उसका कोई धर्म नहीं होता है जिस परिवार में जन्म होता है उस परिवार का धर्म बच्चे का धर्म बन जाता है।

2. व्यक्ति पसंद करने में किसी को स्वतंत्रता नहीं मिलती है। व्यक्ति कहता ये मेरा धर्म है, वास्तव में वो धर्म उसने खुद सोच समझकर पसंद नहीं किया है। वर्तमान समाज व्यवस्था में उसके पास कोई विकल्प ही नहीं रखा गया है। बड़े होने के बाद लोग उस धर्मको अपना धर्म मान लेते हैं।

3. होना तो ये चाहिए कि हरेक व्यक्ति को स्वतंत्रता दी जाये कि वह 21 साल की उम्र के बाद सोच समझकर काफी स्टडी करने के बाद अपना धर्म पसंद करे। **उसके पहले व्यक्ति धर्म के बगैर जी सकता है। जैसे पति/पत्नी के बगैर जीते हैं।** उसके बाद भी व्यक्ति को कोई धर्म पसंद न आये तो नास्तिक बन सकता है।

4. आज की स्थिति में भी कई लोग किसी धर्म को नहीं मानते हैं और खुद को नास्तिक घोषित कर देते है। **ऐसे करने का उसे पूरा अधिकार है।** समाज या राष्ट्र व्यक्ति पर जोर जबरदस्ती नलहीं कर सकता हद्दै कि भाई, क्यों तुम्हारा कोई धर्म नहीं है।

5. जन्म के समय हमारा कोई धर्म नहीं था, और आज भी हम कोई धर्म का पालन करना नहीं चाहते हैं तो हम ऐसा कर सकतो हैं। **नास्तिक होना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।**

6. ये मैं इसलिए बता रहा हूं कि काफी लोग ऐसे है जो नास्तिक तो बन गये हैं लेकिन डरते हैं, किसी को बताते नहीं कि हम नास्तिक हैं। **नास्तिक होना कोई बुरी बात नहीं है,** हिम्मत से घोषित करो कि हम नास्तिक हैं।

7. आजकल धर्म का नशा ज्यादा हो रहा है। पिछले पच्चीस साल में धार्मिक कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है। गणेशोत्सव, नवरात्रि, रथयात्रा, यज्ञ, कथा, सेवा–पूजा, मंदिर निर्माण सब में वृद्धि हुई है। धार्मिक लोगों को धर्म का प्रचार–प्रसार करने का जितना अधिकार है उतना ही अधिकार नास्तिक को अपनी विचारधारा का प्रचार–प्रसार करने का है।

8. इसलिए हक से अपने विचार रखिए, उसके समर्थन में दलील पेश कीजिए। नास्तिकता के समर्थन में बोलते रहिए, लिखते रहिए, पढ़ते रहिए। नास्तिकता का प्रचार करना हमारा अधिकार है और फर्ज भी क्योंकि लोगों में वैज्ञानिक सोच का विकास करना संविधान के मुताबिक हम सबका फर्ज है, और फर्ज निभाने में कैसा डर?

हम वैज्ञानिक सोच रखें

• भन्ते बोधि रत्न

मानव की मूलभूत आवश्यकता है– भोजन, वस्त्र, आवास, दवा एवं आज के समय के अनुसार आने जाने के साधन, संचार माध्यम–रेडियो, टी.वी. मोबाइल फोन आदि। शिक्षा से समाज का निर्माण होता है। जैसी शिक्षा समाज को दी जाती है वैसा ही समाज बनता है। समाज के कुछ चुटकी भर लोगों ने लोगों की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करने एवे उसके विकास के लिए तो कुछ नहीं किया, बल्कि अपने स्वयं के लाभ के लिए काल्पनिक देवी देवता एवं ईश्वर की रचना कर डाली।

स्वयं आलसी निकम्मा बने एवं दूसरों को निकम्मा बनाया। अगर ये 33 करोड़ देवी देवता व ईश्वर भारत भूमि में रहते हैं तब भी भारत की अधिकतम जनता भूखी, नंगी अभावग्रस्त क्यों है? क्यों नहीं ये देवी देवता व ईश्वर भारत के लोगों की दशा सुधारते।

केवल चुटकी भर लोग ही आज सारे प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर रहे है, ऐयाशी कर रहे हैं, जो चाहते हैं सो वो कर रहे हैं लेकिन सामान्य जनता इन देवी देवताओं व ईश्वर के नाम पर अच्छा जीवन पाने की आशा में जो गाढ़ी कमाई से अर्जित करते हैं वह भी नहीं खा पाते।

ये पण्डा पुजारी धर्म के नाम एक न एक कार्यक्रम समाज में करते रहते है और जनता को जोंक की तरह चूसते हैं। स्वयं तो मोटे होते हैं तथा जनता अभावग्रस्त जीवन जीती है। आज जरूरत है वैज्ञानिक सोच की, **अब तक तो ये देवी देवताओं ने हमारा विकास नहीं किया तो आगे भी नहीं कर पायेंगे क्योंकि इनके हाथों में कुछ नहीं है।**

व्यक्ति जो करता है वहीं होता है। अगर कोई बबूल का वृक्ष लगाएं तो क्या वह आम का दशहरी फल प्राप्त कर सकता है? कदापि नहीं। इसके लिए आम का दशहरीवृक्ष लगाना पड़ेगा।

ऐसे ही जब हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सुखी हो, हम समृद्धिशाली बनें, तो इसके लिए हमें कठिन मेहनत करना होगा, अच्छी शिक्षा प्राप्त करनी होगी, **वैज्ञानिक सोच रखनी होगी तभी हमारा विकास होगा।** हम समृद्धिशाली बनेंगे।

इस समाज में बहुत से लोग अपने बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर तो बनाना चाहते हैं लेकिन उनके भविष्य के विषय में जानने के लिए उन बेवकूफों के पास जाते हैं जिनको खुद अपने जीवन के विषय में पता नहीं है। स्वयं तो रोड पर बैठे हैं, पर दूसरे के भविष्य की बात करते हैं।

आज जरूरत वैज्ञानिक सोच की है। हम जो कुछ भी करे उसको करने से पहले स्वयं से प्रश्न करें–क्या, क्यों, कैसे, कहां? इस प्रकृति में जो कुछ भी घटित होता है वह कार्य–करण सिद्धांत के नियम का पालन करता है। गेहूँ बोने से गेहूँ पैदा होगा, चना नहीं।

आज कम्पीटीशन के युग में जो मेहनत से पढ़ाई करेगा वह सफल होगा, न कि हाथ में रक्षासूत्र (लाल, पीला धागा) बांधने से। अगर ऐसा होता तो वह अंगूठी बेचने वाला स्वयं अपने व अपने बच्चों को पहनाता तथा सफलता के शिखर पर पहुँचता, सारे बड़े–बड़े पदों पर वह खुद होता लेकिन ऐसा तो वह नहीं कर पाता वह तो लोगों को बेवकूफ बनाकर पैसा ऐंठता है।

मैं पूर्ण आशा एवं विश्वास के साथ यह कह रहा हूं कि आज का बच्चा–बच्चा वैज्ञानिक सोच वाला है वह पूरी दुनिया को देख रहा है। मोबाइल, लैपटाप, कम्प्यूटर का प्रयोग कर रहा है। आइस्टीन की भविष्यवाणी अवश्य सत्य होगी कि 21वीं सदी विज्ञानवादियों की होगी।

•

पृष्ठ 1 का शेष....केरल का दलित साहित्य

महसूस किया कि सारे दलितों की सम्मिलित कोशिश से ही अपनों को अधिकार एवं तरक्की मिलेगी। अतः उन्होंने 1907 फरवरी में 'साधुजन परिपालन संघ'' की स्थापना कर दलितों के संपूर्ण अधिकार के लिए भरसक प्रयत्न किया। स्मरणीय है कि अम्बेडकर ने भी यह महसूस किया और कहा, ''दलित अपनी दशा को स्वयम् पहचानें और अपने को सुधारे। किसी भी क्षेत्र के उच्च वर्णों से हम कम नहीं है–यह जान लो।''

भारत के दलितों के लिए आज भी वे उक्तियां मार्गदर्शक हैं। इसलिए आज के दलित विद्वान नेता यह चाहते हैं कि दलित समाज का परिवर्तन दलितों के नेतृत्व में, दलित जनतांत्रिक क्रांति के माध्यम से संपन्न हो। इतना ही नहीं ''अब हमारी जिम्मेदारी होगी कि डॉ. अम्बेडकर द्वारा रूपायित जनतांत्रिक परिवर्तन के सिद्धांत को मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वंद्वात्मक परिवर्तन के सिद्धांत के साथ जोड़कर पूरा समाजपरक अध्ययन करें। वर्ण समाज के अध्ययन के लिए अम्बेडकर ने एक पद्धति दी है। उन्होंने उत्पाद प्रक्रिया से जुड़े हुए वर्ण के अस्तित्व को स्पष्ट करते हुए कहा था ''जाति मथोरी, अमेरिका के अमेरिन्डिन् आदि आदिम जनसमूह की, और भारत के दलितों की अवस्थाओं में अधिक अंतर नहीं है। उनके साहित्य को ''चौथे विश्व'' के साहित्य के रूप में भी कुछ विद्वान मानते हैं। आस्ट्रेलियन उपन्यासकार एवं कवि मुडू–रू–नरोजिन ने कहा कि इनका साहित्य अभिजात साहित्य से भिन्न है इसलिए अभिजात साहित्य से तुलना नहीं करनी है। आज साटलैट मीडिया और मार्केट एकोणमी के युग में संस्कृतिक अधिकार के बारे में गौर के साथ चर्चा करनी है।

अपनी सांस्कृतिक सत्ता को प्रतिष्ठित करना ही दलित साहित्य का लक्ष्य है। कला और साहित्य यहां सिर्फ एक माध्यम नहीं, एक जरूरत भी है, क्योंकि दलित कला और दलित साहित्य को उनके ही आचार–विचार एवं सैद्धांतिक आचरण के धरातल पर अपनी भूमिका अदा करनी है। वर्षों से दलित अपने जीवन क्रम में अपने अस्तित्व का एक शक्ति दर्शन रूपायित करता आया है। लोक साहित्य एवं कला का सही विश्लेषण करने से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। कांचा एलैय्या ने इस दर्शन के चार आयामों की ओर संकेत दिया है। 1. श्रम के बल पर जीना, 2. मानव चलेगा कि उनमें ''बाहर प्रगतिवादी अंदर वर्णवादी दृष्टि'' ही काम कर रहा है। इसलिए इन रचनाओं का सौन्दर्य बोध उसी अभिजात वर्ग का ही है। बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के रंगप्रवेश में दलितों का सत्व बोध धीरे–धीरे वर्ग बोध में परिवर्तित करने का प्रयास शुरू हुआ। परिणामस्वरूप एक लम्बे समय तक दलित रचनाओं की कमी दिखाई पड़ी। बात तो साफ है, ''दलितों के सत्व बोध का विकास प्रगतिवादी कम्युनिस्टों का एजेंडा नहीं था।''

आधुनिक संदर्भ में 1980 के आस–पास शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ी के दलितों से ही सही अर्थ में दलित रचनाएं मलयालम भाषा को प्राप्त होने लगी हैं। वे अपने अनुभव के आधार पर दलितवादी दृष्टि से रचनाएं करने लगे। इसी बीच देश–विदेश का दलितवादी दृष्टिकोण पर्दा हटाकर सामने अवतारित होने भी लगा था।

टी.के.सी. वडुतला, सी. अय्यप्पन, के.के.एस. दास, जी. शशी, राघवन अत्तोली, सामकुट्टी, डॉ. दासन्, सन्नी एम. कविकाड आदि समसामयिक दलित रचनाकार हैं। वे अपनी रचनाओं के द्वारा दलितों के सौन्दर्य बोध पर को स्वीकार करने की मानसिकता में नहीं था। सी. अय्यप्पन का ''उच्चयुरक्कत्तिले स्वप्रंडल'' (दोपहर की नींद के सपने) दोनों कथ्य और शिल्प में दलितवादी दृष्टि से संपन्न संग्रह है। ''प्रेतभाषणम्'' नामक कहानी के पुलय स्त्री भगवान से एक प्रश्न पूछती है, ''वह कैसे भोले नाथ, ईसाई पुरुष के लिए पुलय स्त्री बहन कैसे हो सकती है?'' यह प्रश्न सुनते वक्त भगवान के मुंह में केला था (मुंह में केला घुसाना–मुंह बन्द करना)। भगवान के मुंह में केला घुसाने वाली पुलय स्त्री केरल के प्रगतिवादी साहित्य एवं उच्च वर्ण के मूल्य बोध को हमेशा शिकार करने वाला एक सशक्त बिंब है। इसी प्रकार ''भूत बली'' नामक कहानी की रेवती, देश के प्रथम दलित अध्यापक कण्डन कोरन की लड़की है। रेवती के जीवनानुभवों को चित्रण कर अंत में यक्षि का बिंब चित्रण अपने आप दलित कहानियों की शैली को रूपायित करने में सफल सिद्ध हुआ है। लेकिन केरल के तथाकथित साहित्य और सौन्दर्य बोध में उपर्युक्त रचनाओं को स्वीकार करने की मानसिकता कहां? दलित साहित्य के प्रति अपनी–अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त निषाद की ओर संकेत दे रहा है। वह कहता है–''सौमिनी, काला रंग अच्छा है, तुमने कहा न? गाया है कवि ने भी, फिर काले रंगवाले क्यों दलित पीड़ित बन गये?'' इस प्रश्न के सामने केरल का सौन्दर्य बोध रह जाता है। कवि का कहना है कि काला रंग प्रेम का रंग है। राघवन अत्तोली के कण्डत्ति, मोलिमाट्टम्, मौन शिलाओं के प्रणय गीत आदि कविता संग्रह की रचनाएं दलितों के कटु अनुभवों पर आधारित हैं। अपनी कविताओं को कभी आक्रोश, कभी व्यंग्यात्मक, कभी प्रतीकात्मक रूप से वे प्रस्तुत करते हैं। आस्थावादी दृष्टि से कवि कहता है कि हमारे पूर्वज और उनकी संस्कृति ही हमारी प्रेरणा है।

यह पुलत्तरा, यह बलित्तरा
यहां तू अकेले बैठे, आज
तब पितामह मैं–साथ हूं
भविष्य में हमें एक ही परछाई
एक ही धरती
एक ही काल।

अतः हम कह सकते हैं कि हमारे पूर्वजों का एक सम्पन्न संस्कार है, उनकी अपनी कलाभिव्यक्ति है, साहित्य है, जीवत रीति है और सौन्दर्य बोध है। लेकिन आज के बदलते परिवेश के

ऐसा वर्ग है जिसने पट्टी बांध ली है। पर यह पट्टी खोली नहीं जा सकती है।'' इसलिए जिस प्रकार वर्ग–संघर्ष के दास किसानों के रूप में, किसान जमींदारों के रूप में बदल जाते हैं उसी प्रकार जाति–संघर्ष में चमार, महार, पुलयर, पाणर आदि पिछड़ी जातियों के रूप में और पिछड़ी जातियां ब्राह्मणों के रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया संभव नहीं है। इसी पृष्ठभूमि के साथ हम दलित साहित्य संबंधी चर्चा आरंभ करेंगे।

दलित साहित्य

दलित शब्द आज अपने आप एक ''संस्कृति'' का परिचायक बन गया हैं यह दलितों के सत्य बोध का परिचायक शब्द है, जिसे उच्च वर्ग के लोगों ने दस्यु, राक्षस, अवर्ण, निषाद, पंचमर, चण्डाल और अंग्रेजों ने डिप्रस्ड क्लास, गांधीजी ने हरिजन, भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति–जनजाति आदि पर्यायों से विभूषित किया। अपनी सांस्कृति अभिव्यक्ति दलितों का जन्म सिद्ध अधिकार है। यह संस्कृति मल्टी कल्चरल है और इस संस्कृति का अन्य समान सांस्कृतिक इकाइयों से भी संबंध है (इन्टर और क्रोस कल्चरल)। आन्तरिक और बाह्य कारणों से अपनी भूमि से कटे और संस्कार से दूर हटाये आस्ट्रेलिया के अबोर्जिनल, स्कान्डिनेविया के सामी, न्यूजीलैंड के और प्रकृति के बीच संघर्ष में से दर्शन को रूपायित करना, 3. उत्पादन का समान हिस्सों में उपभोग और 4. मानवीय सम्बन्धों में भाषा, भाव और आचरण में समानता। एलैय्या जी की दृष्टि, भूमि, प्रकृति, श्रम शक्ति, उत्पादन, समानता आदि मूलभूत तत्वों पर आधारित है। कोई शक नहीं ब्राह्मण या अभिजात वर्णों के असमानता दर्शन से भिन्न यह समानता का ''शक्ति दर्शन'' है। स्वाभाविक है कि दलित साहित्य भी समानता का साहित्य है।

केरल में दलित साहित्य

अय्यन् काली के साथ–साथ पण्डित् करुप्पन ही एकमात्र कवि और साहित्यकार हैं जो अपनी रचनाओं के माध्यम से दलितों को अपने सत्व बोध की ओर ले जा रहा था। यद्यपि कुमारनाशान, चडपुला, तकली, एम. टी. वासुदेवन नायर, अय्यप्पणिक्कर, शंकरप्पिल्लै, तोप्पिल भासी, ओ.वी. विजयन, वैकम् मुहम्मद बशीर, कावालम् नारायणप्पणिक्कर, आनंद आदि साहित्यकारों की रचनाओं में भी दलित चेतना की अभिव्यक्ति हुई है, तो भी वे लोग दलित वर्ग के साहित्यकार नहीं। अतः इनकी रचनाओं को सहानुभूत साहित्य की कोटी में रखना ही संगत है। क्योंकि भोगे हुए यथार्थ और देखे हुए यथार्थ में अंतर है। ज्यादातर रचनाओं के विश्लेषण से यह पता काफी चर्चा कर रहे हैं। उच्च वर्णवालों का जन्म वर्ण–ब्रह्म लक्ष्य संकल्प है। कला–पुरुषार्थ–मोक्ष आदि मार्ग संकल्प के द्वारा विकार–भाव–रस आदि आन्तरिक प्रक्रिया से रसोत्पादन में अजैविक कला निर्मित ही संभव है। रस में श्रृंगार की प्रमुखता क्यों है? शायद स्वाभाविक रतिभाव दमन करते आने के कारण होगा। दलित साहित्यकारों का मानना है कि स्त्री–पुरुष सम्बन्ध में स्त्री सिर्फ भोगवस्तु नहीं है, समान अधिकार और सम्मान का पात्र है। इस समानता की अन्तरधारा से ही जैविक कला की दृष्टि संभव है। व्यक्ति सत्ता (पुरुष सत्ता) के दमित विकार से संचालित सौन्दर्य बोध में यह समानता कहां? अतः दलितों का सौन्दर्य बोध समानता का सौन्दर्य बोध है। इस दृष्टि से मलयालम की कुछ रचनाओं की चर्चा यहां संगत है। टी.के.सी. वडुतला की कहानी ''अचण्डा व्यंतिंडा इन्ना'' (यह लो पिताजी की व्यंतिडा) अपने आप में अनुपम है। प्रस्तुत कहानी में ईसाई धर्म में परिवर्तित एक पुलयन का अनुभव दलित भावना के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार पोल चिरकाड की रचनाएं पूर्ण रूप से दलित सौंदर्य बोध के साथ मलयालम में प्रस्तुत की गयी हैं। लेकिन केरल का तथाकथित साहित्य और सौन्दर्य बोध उपर्युक्त रचनाओं करने वाली ''अवर्णपक्ष रचनाएं'' 1997 में दूत बुक्स, एरणाकुलम द्वारा प्रकाशित कृति है।

दलित कवियों में प्रमुख है के.के. एस. दास। गोत्र संस्कृति और उच्च वर्णों के मूल्य बोध का निषेध आपकी कविताओं का मूल स्वर है। भूतल के अक्षरत्तराओं (चबूतरा) को अपनाने की उद्घोषणा करनेवाला दास दलितों के बाघ की आंखों की ओर देखने का आह्वान करता है। आर्य राक्षसीयता से संघर्ष करते हुए कवि कहता है–

इतिहास के अक्षरत्तराओं में
मैं फिर जन्म लूंगा
प्रभात के कपड़े
और सिंह के दांतों के साथ
इंतजार करना
हमें इस भूमि का वसंत
बांट लेना है।

.....

जाति विहीन जाति वाले
वेद विहीन मानव गण
संघर्ष से मृत्यु तक
आजादी का संस्कार है।

कवि जी. शशी का कहना है कि जब प्रतीक्षा रोकी जाती है तब वाल्मीकि वही पुराने निषाद बनेंगे। भारत की सांस्कृतिक प्रक्रिया निषाद से वाल्मीकि तक की प्रक्रिया है तो शशी हठ करके आज के सौन्दर्य बोध के खिलाफ अनुसार अपनी संस्कृति से शक्ति अर्जित कर आज की समस्याओं को हमारे अधिकारों को साहित्य रूप देना दलित साहित्यकारों का कर्तव्य है। इसके लिए अपनी भाषा, बिंब, प्रतीक, शैली आदि अपने ही ढंग से अलग प्रस्तुत करना चाहिए। भविष्य में यही साहित्य देश का साहित्य होगा। प्रकृति के चर और अचर वस्तुओं की समृद्धि के लिए पूर्वजों की तरह हम भी गा सकते हैं। पोलिका...पोलिका... पंताल पोलिका... वातिल पोलिका... ऊरु पोलिका... उलकम् पोलिका... वीडु पोलिका... नाडु पोलिका... कुन्नु पोलिका. .. कुलवुम् पोलिका... अर्थात् समृद्धि हो घर की, प्रदेश की, देश की, दुनिया की, पहाड़ की, तालाब की। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

हिमायती
4 / सितम्बर (प्रथम), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 सितम्बर, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 14 सितम्बर, 2019

करोड़ों रविदासियों की आस्था का तीर्थस्थान–दिल्ली का चमारवाड़ा

• संत प्रेमदास जस्सल

मध्य युग में मुगलों का शासन था। वर्ण व्यवस्था के कारण भारतीय समाज अनेक जातियों में बंटा हुआ था। तत्काल निम्नजातियों पर दो ओर से अत्याचार हो रहे थे। एक तो मुस्लिम शासक उन्हें यातनायें देकर अपने धर्म में परिवर्तित कर रहे थे, दूसरी ओर उच्च वर्ग के लोग उन्हें अस्पृश्य समझते थे। चक्की के इन दो पाटों के बीच पतित वर्ग बुरी तरह पिस रहा था। तब विनाश के कगार पर खड़ी मानवता को एक ऐसे पथ–प्रदर्शक की आवश्यकता थी जो भारतीय समाज को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सके। उस समय सतगुरू रविदास का आविर्भाव संवत् 1433 की माघि पूर्णिमा रविवार के दिन काशी में एक चर्मकार परिवार में हुआ। ऐसे अंधकारमय युग में आम जनता को प्रकाश दिखाने के लिए गुरू रविदास ने संतों का एक संगठन खड़ा किया जिसने देश का भ्रमण कर अपने भक्तिभाव से भारतीय समाज को एक नयी दिशा दी। संतरेन सुखवीर सिंह के अनुसार गुरू नानकजी के प्रकाश से पहले जो भक्तिलहर चली थी उसमें रविदास, कबीर, नामदेव, सैन सधना, त्रिलोचन, रामानन्द, सूरदास आदि प्रसिद्ध संतों ने इस भक्ति आन्दोलन द्वारा विदेशी हुकूमत को खोखला कर दिया था। डॉ. जी.एस. चौहान संत करमदास के हवाले से लिखते हैं कि यदि गुरू रविदास और स्वामी रामानन्द नहीं होते तो तत्काल तुगलक एवं सिकन्दर लोधी सभी हिन्दुओं को मुसलमान बना देते। यहां यह बताना भी जरूरी है कि स्वामी रामानन्द भी इस भक्ति आन्दोलन का हिस्सा बन गए थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, 'एक दिन ब्राह्मण रामानन्द अपने शिष्यों को छोड़कर रविदास–कबीर के पास आकर गले मिले। उस दिन समाज ने उन्हें बिरादरी से निकाल दिया। किन्तु उन्होंने तो बहुत बड़ी मानव जाति को अपना लिया था। ब्राह्मण मण्डली की धिक्कार के मध्य खड़े होकर रामानन्द ने कहा था 'सोऽहम्' उसी सत्य की शक्ति से वे उस क्षुद्र संस्कारगत घृणा को पार कर गए थे जो मानव जाति में धर्म के नाम पर आघात करती है।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता रहे श्री रामफल सिंह (सिद्ध संत गुरू रविदास, पृ. 27) के अनुसार, ''सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने गुरू रविदास जी को गुरू माना, उन्हें अन्य संतों के समान ही स्वीकार किया और उनके प्रति आदर व श्रद्धा प्रकट की। केवल ब्राह्मणों के कुछ वर्ग से उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा किन्तु उन्हें भी मुंह की खानी पड़ी और अपनी हीनता, अज्ञानता व अहंकार के लिए लज्जित होना पड़ा। गुरू रविदास जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन हिन्दू धर्म की रक्षा में लगाया। हिन्दू समाज उनका चिरऋणी है। आपने सरकार से विनम्र निवेदन भी किया है कि भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद सभी स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान किया परन्तु उसने आज तक मध्ययुग के स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान नहीं किया। ऐसे महान राष्ट्र प्रेमियों का सम्मान करना भी सरकार का दायित्व बनता है।'' डॉ. हरनेक सिंह कलेर (गुरू रविदास, पृ. 146) के अनुसार गुरू रविदास जी की शिष्य परंपरा की लड़ी में साधारण लोगों के अतिरिक्त उस समय की प्रसिद्ध विभूतियों स्वामी रामानन्द, संत कबीर, सैन, धन्ना, पीपा, रानी झाली, मीराबाई, गुरू नानकदेव, कमाल तथा कमाली के नाम लिए जाते हैं। सतगुरू रविदास जी ने अपनी निर्मल एवं शीतल वाणी से सिकन्दर लोधी का भी दिल पास ही भेज दिया। तब सत्यवती ऋतुवर्ण को लेकर उसके इलाज के लिए घूमती रही। एक दिन सिकन्दर लोधी के राजधानी तुगलकाबाद के नजदीक चमारवाड़ा में पहुंच जाती है यहां एक संत मंडली देखकर उसने भगवान से कहा कि यदि मैं सती हूं तो रात हो जाए। उसी समय रात हो गई। तब संतों ने कहा कि बेटी यह क्या किया। उसने कहा कि पहले मेरे पति को ठीक करो। उन संतों में सतगुरू रविदासजी भी थे। उन्होंने कहा, बेटी इसका इस जौहड़ में स्नान कराओ। जब स्नान कराया तो ऋतुवर्ण का शरीर निर्मल हो गया। उस समय संतों ने उन दोनों की शादी करा दी। जब सतगुरू रविदासजी ने यह कथा सिकन्दर लोधी को सुनाई तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अमृतकुण्ड का क्षेत्र गुरू रविदासजी के नाम कर दिया :

भादों मास पाष उजियारा।
तिथि नौमी और मंगलवारा।।
नषत अस्विनी मेष का चंदा।
पंच जना सो अदा अनंदा।।
जोगिनीपुर दिल्ली बड़ थाना।
साह सिकन्दर बड़ सुल्ताना।।

तब से यह चमारवाड़ा सतगुरू रविदासजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भारत की आजादी के बाद इस पवित्र तीर्थस्थान पर गुरूजी के श्रद्धालुओं की आस्था के अनुरूप सन् 1959 में तत्कालीन उप–प्रधान मंत्री बाबू जगजीवन ने जहां मंदिर का निर्माण करवाया। आज भगवान रविदासजी 40 करोड़ श्रद्धालुओं की आस्था के प्रतीक हैं। डॉ. केशनी प्रसाद चौरसिया (मध्यकालीन हिन्दू संत विचार और साधना) के अनुसार सिकन्दर लोधी ने अपने शासन तंत्र में नवीन जीवन एवं उत्साह लाने का अथक प्रयत्न किया। (दयालु सम्राट प्रतिवर्ष गरीब एवं असहाय व्यक्तियों की सूचियां बनवाता था और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार 6 महीने की जीवन–यापन की सामग्री उन्हें दी जाती थी। वह सतगुरू रविदासजी के स्वराज्य के ही अनुरूप था। संतों ने अस्वस्थ को स्वस्थ किया, नंगे को वस्त्र पहनाये, भूखे को खाना खिलाया, अज्ञानियों को ज्ञन दिया और आचारहीन जनता को आचारवान बनाया। इस प्रकार सामाजिक चेतना से भारतीय समाज का कल्याण किया। इन संतों में क्रांतिकारी गुरू रविदास ही ऐसे अग्रणीय संत थे जो अपने जीवनकाल में ही अनुदारवादी हिन्दू समाज के रक्षक बने। •

35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8-9 दिसम्बर, 2019 को दिल्ली में

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में द्विदिवसीय 35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ोदा गांव, (बुराड़ी बाई पास), निरंकारी समागम ग्राउंड के सामने, आउटर रिंग रोड, दिल्ली–84 में 8-9 दिसम्बर, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों के, सभी भाषाओं के दलितोत्थान में जुटे दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, सम्पादक आदि भाग लेंगे जो दलितोत्थान विषयों पर विचार–विमर्श करेंगे। दलित नेताओं को भी इस सम्मेलन में आमत्रित किया गया है।

सम्मेलन में दलितोत्थान में कार्यरत दलित साहित्यकारों, दलित लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों और समाजसेवियों को बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, महात्मा जोतिबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले आदि राष्ट्रीय अवार्डों से सम्मानित किया जायेगा। आप सम्मेलन में इन अवार्डों से सम्मानार्थ अपना 'बायोडाटा' अकादमी कार्यालय को भेज सकते हैं। इस अवसर पर प्रकाशित 'अकादमी–स्मारिका' के लिए आप अपनी रचना भी भेज सकते हैं।

सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में आप शामिल होकर दलितोत्थान विषयों पर अपने विचार भी रख सकेंगे। इसके लिए आपको अपने विचार/ उद्‌बोधन/सुझावों को लिखित रूप में अग्रिम भेजना होगा। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी आप हमारे फोन/मोबाईल पर सम्पर्क करके ले सकते हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर	कार्यालय	जय सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष	फोन: 011-27421449	*राष्ट्रीय महासचिव*
मो. : 9810278936	011-27421460	मो. 9891989175

E-mail: jay.sumanakshar@gmail.com

जीता जब आपने लोगों का राष्ट्रीयता की ओर अधिक ध्यान आकर्षित किया। आपने फरमाया–

हिन्दू तुरक मंहि नहीं कछु भेदा,
दुइ आयहु इक द्वार।
प्राण पिण्ड लोहु मांस एकइ,
कहि रविदास विचार।।

सतगुरू रविदासजी की भक्ति एवं शक्ति के साथ–साथ समता और समरसता के विचार सुनकर सिकन्दर लोधी आपका मुरीद हो गया। इतिहास साक्षी है कि सिकन्दर लोधी ने आपको एक बार दिल्ली दरबार में भी बुलाया था। तब आप तुगलकाबाद के चमारवाड़ा में 30 दिन तक रहे थे। इस दौरान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (हिन्दी साहित्य का इतिहास) के अनुसार मथुरा के राजा चन्द्रउदय की बेटी सत्यवती जो भगवान महादेव की भक्त थी और इन्द्रपति राजा के बेटे ऋतुवर्ण का एक जंगल में एक झील के पास मिलाप हुआ। वह सत्यवती की ओर एकटुक ताकता रहा तब उसे क्रोध आ गया। सत्यवती ने ऋतुवर्ण को श्राप दिया कि जा पापी तू कोढ़ी और व्याधिग्रस्त हो जा। ऋतुवर्ण वैसा ही हो गया और फूट–फूट कर रोने लगा। सत्यवती उसे जंगल में ही छोड़कर चली गई। इस घटना का जब उसके पिता को पता चला तो उसने अपनी बेटी को ऋतुवर्ण के

नारी शिक्षा से कांपता हिन्दू धर्म

• सुश्री तुलसी टिंगे

लड़की का 9 साल की उम्र में शादी का धार्मिक– शास्त्रीय प्रावधान इसलिए रखा गया, ताकि स्त्री पढ़ ना सके। ये लिखने वाले मनुवादी ठग आखिर क्या चाहते थे? एक तरफ पुरुष के लिए 25 वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम तो स्त्री के लिए नादान उम्र में पति–परमेश्वर! ये स्त्रियों के लिए सनातन ठगी नहीं तो क्या है? कोई मुफ्तखोर उसे 'ताड़न का अधिकारी' बता रहा है तो कोई एकांत का दुरुपयोग करने वाली, तो कोई उसे नरक के द्वार। सारे व्रत, सारे गुनाह, सारे एहतियात स्त्री के लिए ही लिखने का मकसद आखिर क्या रहा होगा?

सती प्रथा, जौहर, कन्या वध, दहेज देवदासी, वैधव्य प्रताड़ना, पर्दा प्रथा, सब नारी को ही क्यों? क्या अपनी ही मां, बहन, बीवी, बेटी के प्रति इतना क्रूर है हमारा समाज? किसने बनाया उन्हें इतना नियमबद्ध क्रूर? सनातन संस्कृति का आधार क्या यही क्रूरताएं हैं? जब–जब नारी ने पढ़ने की, शिक्षा ग्रहण करने की सोची, सनातन पाखण्डियों को पसीने क्यों आये? क्योंकि धर्म डरता है शिक्षा से, जो कि ज्ञान देती है और तर्क करती हैं। जहां तर्क है, वहां धर्म को आस्था के पीछे छुपना पड़ता है। गौरी लंकेश से इतना डरा सनातन धर्म कि उसकी हत्या ही करा डाली। पुरुष लिखते हैं तो धर्म को कम खतरा था, मगर स्त्री होकर लिखे, यह तो क्रांति का आगाज है, धर्म का काल है भई। अगर स्त्री ने धर्म के स्वार्थपूर्ण नियमों को समझ लिया तो कौन ढोयेगा इस पाखण्ड को? कलश यात्रा, चुनरी, जागरण, व्रत कथा, सत्संग, कथाएं, रिवाज, दक्षिणा, जिद, सस्वर नृत्य, आभूषण, बन्धन, रिश्ते, समागम पवित्रता, सात जन्म, वचन, सब बोझ पुरुष के बस का थोड़े ही है? काश! हर औरत इस सनातनी धार्मिक साजिश को समझ पाती! यदि संविधान नहीं होता तो नारी का अस्तित्व सिर्फ और सिर्फ भोग–विलास की वस्तु होने तक ही सिमट जाता। पौराणिक भागवत कथाओं की बजाय संविधान से प्राप्त नारी अधिकार की धाराओं के प्रचार कीजिये ताकि कोई भी रिश्ता उस से कुछ भी धार्मिक प्रपंच के नाम पर लूट ना पाए।

अब धर्म–ग्रंथ नहीं, आईपीसी की धाराएं पढ़ाइये अपनी बेटियों को। व्रत नहीं, भरपेट खाना खिलाइए अपनी बेटियों को, दहेज नहीं, अच्छी शिक्षा पर खर्चे, संस्कार ही नहीं जूडो कराटे भी सिखाइये अपनी बेटियों को और अगर उसके साथ कोई भी अनहोनी होती है तो उसे अहसास दीजिये कि पापा, पति या भाई उसे समाज द्वारा स्त्री होने की परम्परागत सजा नहीं थोपने देंगे।•

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009